J.N.L. College

Khagaul, Patna-801105

(A Constituent Unit of Patliputra University, Patna)

E-mail : jnl_college@yahoo.com | Website : www.jnlcollegekhagaul.org

Principal Office

Ref.No. 497/GS/2023 Date 14/12/2023

Declaration

This is to certify that the data includes in this self-study Report (SSR) are true to the best of my knowledge. This SSR is prepared by the institution after discussion and no part thereof has been outsourced.

I/We am/are aware that the peer team will validate the information provided in this SSR during the peer team visit.

14.12.23

Prof. (Dr.) Nikhil Kumar Singh
IQAC Director
J. N. L. College, Khagaul
Patna-801105

IQAC Director J.N.L. COLLEGE KHAGAUL PATNA 801105

14.12.2023

Prof. (Dr.) Madhu Prabha Singh
Principal
J.N.L. College, Khagaul,
Patna

PRINCIPAL J.N.L. COLLEGE KHAGAUL, PATNA

राम काव्य
का
वैश्विक स्वरूप और जीवन दृष्टि

संपादक : डॉ. मधु प्रभा सिंह

राम काव्य का वैश्विक स्वरूप
और
जीवन दृष्टि

संपादक
डॉ. मधु प्रभा सिंह

Dr. Krishnachandra Mishra Publication Pvt. Ltd.
Kathmandu, Nepal

ISSN: 2705-4810

साहित्यलोक

भाषा, साहित्य, संस्कृति और साहित्यिक सिद्धान्त की अनुसंधानपरक शोध पत्रिका

वर्ष ४३ । अंक २ । सम्वत् २०७९ । ज्येष्ठ (सन् २०२२)

संगोष्ठी विशेषांक

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राम और रामायण का स्वरूप

प्रधान सम्पादक
डॉ. संजीता वर्मा

सम्पादक
डॉ. सुमन रानी
संजय कुमार

सह सम्पादक
डॉ. श्वेता दीप्ति
प्रीति गुप्ता

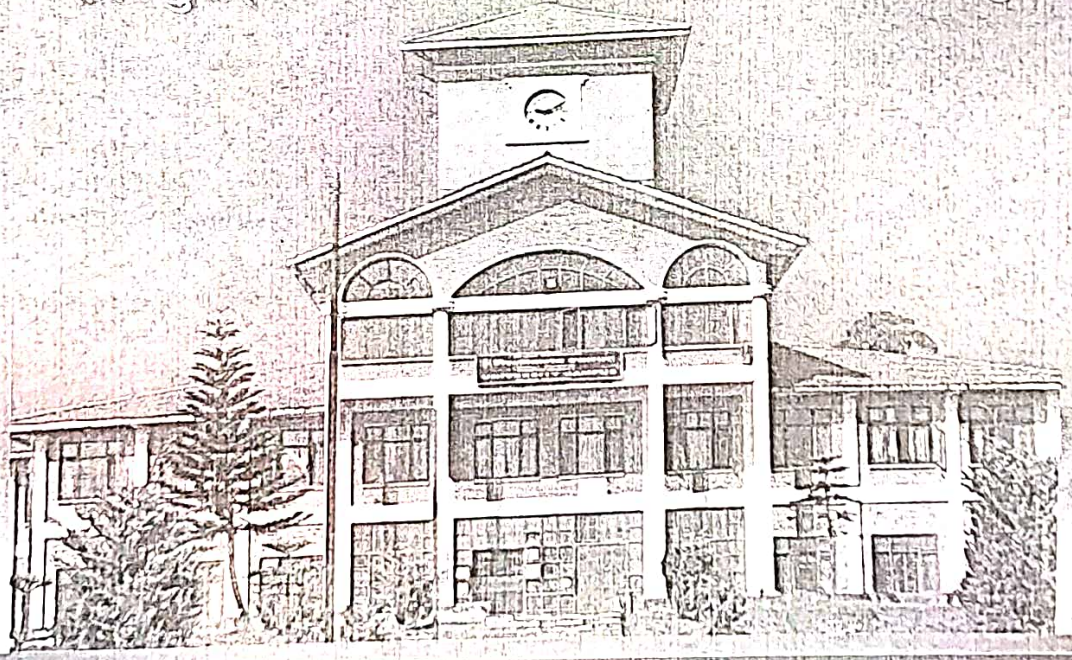

हिन्दी केन्द्रीय विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, नेपाल

अनुक्रम

	सम्पादकीय	5
1.	निराला : राम की शक्तिपूजा **प्रीति देवी**	11
2.	तुलसीदास और रामचरितमानस : उत्तरकाण्ड के विशेष संदर्भ में **अनूप कुमार पटेल**	16
3.	रामकाव्य परंपरा और साकेत **रूपम कुमारी**	20
4.	वाल्मीकि रामायण में सांगीतिक तत्व **गुरप्रीत कौर**	25
5.	रामचरित मानस में राम का स्वरूप **प्रिया सिंह**	31
6.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श चरित्र का अध्ययन **गीता देवी**	35
7.	वाल्मीकि और रामायण **डॉ सत्यनारायण एच.के.**	41
8.	छत्तीसगढ़ की संस्कृति में राम और रामचरितमानस के प्रभाव का अध्ययन **डॉ. अरविन्द कुमार जगदेव**	47
9.	मर्यादा पुरोषोत्तम राम का स्वरूप एवं रामचरितमानस **डॉ. बारेलाल जैन**	55
10.	विश्व में रामायण का स्वरूप **डॉ. रामटहल दास**	59
11.	रामचरित मानस एवं दलित विमर्श : एक विश्लेषणात्मक परिदृष्टि **डॉ. मधु प्रभा सिंह**	64
12.	रामचरितमानस में वर्णित घटनाओं में वैज्ञानिकता **डॉ. शिवदयाल पटेल**	69
13.	प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी विमर्श **राजेश कुमार चौहान**	78

उत्तर छायावादी कविताओं में राष्ट्र बोध

डॉ मरित
सहायक प्राध्यापिका
जगत नारायण लाल कॉलेज , खगौल ।

ादी के तीसरे दशक के पूर्वार्ध में सम्पूर्ण भारतवर्ष आज़ादी के अमृत महोत्सव में सराबोर हो रहा है। ऐसे में यह अ
है कि साहित्य जगत भी इस पावन महोत्सव में अपनी महती भूमिका तय करे। इन्हीं बातों को ध्यान में रख कर
ा स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी साहित्य की भूमिका पर विचार मंथन करते हुए उत्तर -छायावादी कवियों एवं उनकी र
न केंद्रित हुआ। फलस्वरूप इस संगोष्ठी हेतु मेरे शोध प्रपत्र का विषय है - "उत्तर छायावादी कविताओं में राष्ट्र बोध

स्वतंत्रता आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास के साथ हिंदी कविता और कवियों के राष्ट्रीय रिश्ते मज़
जनीतिक घटनाक्रम में कवियों के तेवर बदलते रहे और कविता की धार भी तेज होती गई। आंदोलन के प्रारम्भ से
ा प्राप्ति तक हिंदी काव्य संघर्षों से जूझता रहा। संघर्ष के इसी दौर में "मुक्ति की आकांक्षा " के स्वर हिंदी काव्य के
ाद' में मुखरित हुए, और 'उत्तर छायावाद' में पुष्पित- पल्लवित होकर स्वतंत्रता आंदोलन को एक नए रूप में उ
ाहित्यिक कालखंड में उत्तर छायावाद के नाम से जाना गया।

उत्तर छायावादी कवि उत्सर्गधर्मी राष्ट्रीयता का सन्देश देते हैं और इसके लिए ओज़ और मस्ती के स्वर को ले
त होते हैं।अपनी मस्ती, उमंग एवं उल्लास में मदमस्त ये कवि युगीन परिवेश के प्रति जागरूक थे।प्रगतिशीलता का
-भावना, धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियों का विरोध आदि के द्वारा वे देश के प्रति अपनी चिंता को व्यक्त कर रहे थे। इन
ने तद्युगीन आशा-निराशा से भरी परिस्थितियों को देश और विश्व के व्यापक यथार्थ से जोड़कर उसे जनता तक प
ाहित्य की सार्थकता को सिद्ध किया।

अपनी मातृभूमि को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करना ही उनका परम कर्तव्य था जिसका निर्वाह वे
नों और स्वाधीनता – संग्राम में सक्रिय भाग लेकर कर रहे थे। कवि अपने संकुचित 'स्व' के घेरे से निकल 'पर' का वि
ने लगा। पराधीनता के प्रति आक्रोश से भरा कवि मन पुकार उठा-

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,जिससे उथल-पुथल मच जाये।
एक हिलोर इधर से आए,एक हिलोर उधर को जाये।
नाश! नाश! हाँ महानाश! की ,प्रलयंकारी आँख खुल जाये!"

ये कवि देशवासियों को आगाह करते हुए कहते हैं --

"कब तक क्रुर प्रहार सहोगे ?
कब तक अत्याचार सहोगे ?
कब तक हाहाकार सहोगे ?
उगो राष्ट्रके हे अभिमानी
सावधान मेरे सैनानी।"

समय गतिमान व सतत परिवर्तनशील होता है। किन्तु जब अतीत के कवि और काव्य के कोई मूल्य वर्तम
देने का कार्य करते हैं, तो अतीत के वे कवि और उनका चिंतन हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं। आज हम एक आज़
रहे हैं किंतु मानसिक पराधीनता से हमें पूर्णतः मुक्ति नहीं मिल पायी है। ऐसे में उत्तर- छायावादी कवियों की कवि
स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बल्कि आज भी उतनी ही प्रासंगिक नज़र आती हैं। शोध -पत्र में इसकी चर्चा विस्तार
जाएगी।

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

[illegible]

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में संस्कृत की विकास यात्रा

प्रमाण पत्र

क्रमांक सं. 132

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ0 अवन्तिका कुमारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर जे.एन.एल. कालेज पटना बिहार ने सन्त गणिनाथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ एवं उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में (ऑफलाइन/ऑनलाइन) प्रतिभाग किया और स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण में संस्कृत शीर्षक/विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित विशिष्ट शोधपत्र प्रस्तुत किया।

अतः आयोजन मण्डल इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आचार्य [illegible] मिश्र	पवन कुमार (IAS)	डॉ0 [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
डॉ0 [illegible] यादव	डॉ0 [illegible] कुमार	डॉ0 [illegible] शुक्ल
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

साहित्य संस्कृति फाउंडेशन
नई दिल्ली

केंद्रीय हिंदी संस्थान
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

अनुग्रह नारायण कॉलेज
पटना

आज़ादी का अमृत महोत्सव

'आजादी का अमृत महोत्सव'

के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्वाधीन भारत में सांस्कृतिक पुनरुत्थान के आयाम

14-15 मई 2022

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ....डॉ॰ अवन्तिका कुमारी, सहायक प्राचार्य........

जगत नारायण लाल कॉलेज, पटना........ ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में साहित्य संस्कृति फाउंडेशन, केंद्रीय हिंदी संस्थान (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) एवं ए. एन. कॉलेज, पटना द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय सहभागिता की तथा

........भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य........

विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ. विजय कुमार मिश्र	प्रो. एस. पी. शाही	प्रो. बीना शर्मा
अध्यक्ष, साहित्य संस्कृति फाउंडेशन	प्राचार्य, ए. एन. कॉलेज, पटना	निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान

Chapter 9
Role of Arbuscular Mycorrhizal Fungi in Amelioration of Drought Stress in Crop Plants

Pallavi and Anil Kumar Sharma

Abstract Present chapter addresses the importance of arbuscular mycorrhizal (AM) symbiosis in the mitigation of one of the most limiting environmental constraints in terms of global crop productivity loss, i.e. drought/water stress. Superior root morphology leading to enhanced water and nutrient uptake, better antioxidant machinery to fight the elevated reactive oxygen species (ROS), along with improved osmotic adjustment by accumulating high levels of compatible solutes like proline, glycine betaine, sugars, etc., are among the multifaceted factors which make AM association far more significant than any other symbiotic association in plants. So far little progress has been made on molecular level to understand the mechanisms of this miraculous organism which include the involvement of aquaporins, some binding protein genes (BiPs), MAPK pathway genes, and stress responsive genes like proline dehydrogenase, invertase, proline synthetase, etc. However, with the advancement of new age molecular techniques it seems possible that the unravelling of this mystery is not far away.

Abbreviations

AM	Arbuscular Mycorrhiza
ATP	Adenosine triphosphate
BiP	Binding proteins
CAT	Catalase
EEA	European Environment Agency
ERM	extraradical mycelium
GOGAT	Glutamine synthase
GS	Glutamine synthetase

Pallavi

Pallavi (✉)
Department of Botany, J.N.L. College, Patliputra University, Patna, Bihar, India

A. K. Sharma
Department of Biological Sciences, College of Basic Science and Humanities, G.B. Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar, Uttarakhand, India

© Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2021
A. Sharma (ed.), *Microbes and Signaling Biomolecules Against Plant Stress*, Rhizosphere Biology, https://doi.org/10.1007/978-981-15-7094-0_9

Chapter 7
Proteomics for Understanding the Interaction Between Plant and Rhizospheric Microflora

Ramesh Namdeo Pudake, Pallavi, and Mrinalini Singh Pundir

Abstract Rhizosphere is a complex system of biological activities of plants and microflora. Interaction between plants and microbes residing in its rhizosphere has been point of interest among the scientific communities for a long time. In-depth knowledge of these interactions is crucial to the current world scenario in context of food availability. Metagenomics and metatranscriptomic studies are being done with the objective elucidate the diversity of culturable and nonculturable microbiome. But this information is incomplete without understanding their functional role in plant–microbiome interaction. Complete proteome represents the ongoing metabolic processes happening in soil at particular time and needs to be studied for knowing the key players in functionality of microbiome. Metaproteomics is emerging tool that sketch the information about entire proteins present in a specific environmental situation at a particular time. It correlates the diversity and functionality of soil microorganisms in both dominant species and at community level. With the help of traditional tools, the development of high-throughput proteomics tools like mass spectrometry, the better understanding of functional aspects of soil complex system has become feasible. However, the progress is little bit slow due to the presence of some bottle neck like presence of various interfering molecules present in the soil samples, scarcity of soil proteome databases, etc. This chapter discusses proteomics tools that are available and review recent studies where the proteomics tools have been applied to decode the underlying processes responsible for differential functioning of soil microbiome in diverse environments.

R. N. Pudake (✉)
Amity Institute of Nanotechnology, Amity University Uttar Pradesh, Noida, Uttar Pradesh, India
e-mail: rnpudake@amity.edu

Pallavi
J.N.L. College Khagaul, Patliputra University, Patna, Bihar, India

M. S. Pundir
Department of Biological Sciences, College of Basic Science and Humanities, G.B. Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar, U.S Nagar, UK, India

© Springer Nature Singapore Pte Ltd. 2021
R. N. Pudake et al. (eds.), *Omics Science for Rhizosphere Biology*, Rhizosphere Biology, https://doi.org/10.1007/978-981-16-0889-6_7

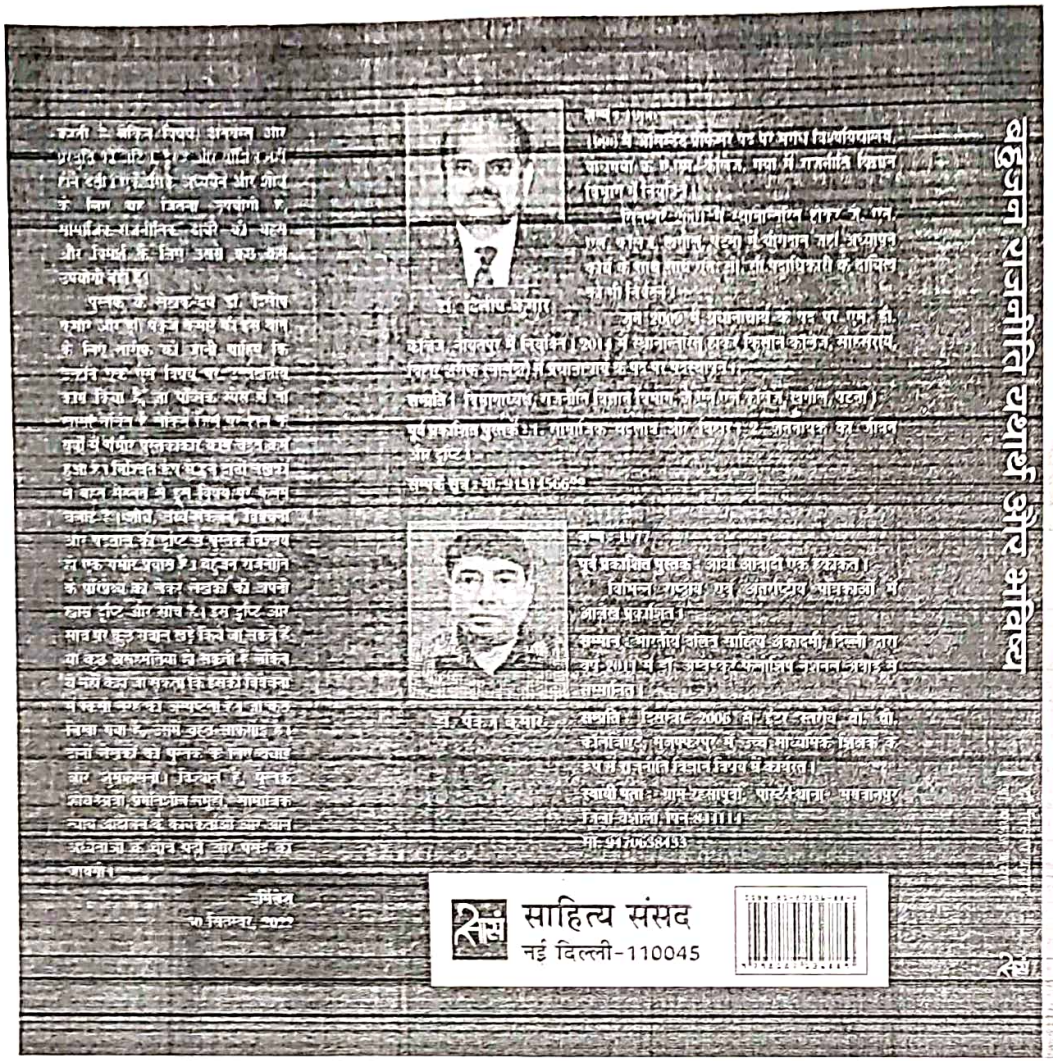

[illegible]

डॉ. दिलीप कुमार

[illegible]

सम्प्रति : विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग [illegible]

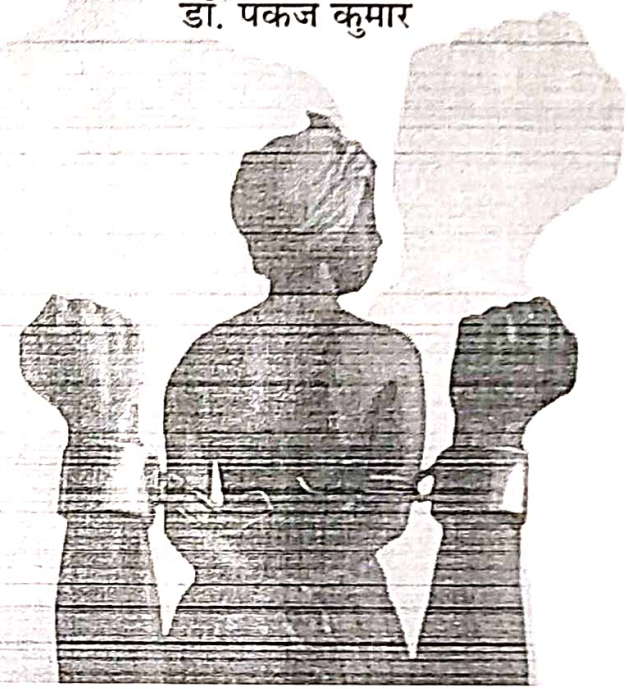

पूर्व प्रकाशित पुस्तकें : [illegible] और दृष्टि।

सम्पर्क सूत्र : मो. [illegible]

डॉ. पंकज कुमार

जन्म : 1977

पूर्व प्रकाशित पुस्तक : आधी आबादी एक हस्ताक्षर।

विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित।

सम्मान : भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा वर्ष [illegible] में डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप नेशनल अवार्ड से सम्मानित।

सम्प्रति : दिसम्बर 2006 से [illegible] कॉलेजिएट, मुजफ्फरपुर में उच्च माध्यमिक शिक्षक के रूप में राजनीति विज्ञान विषय में कार्यरत।

स्थायी पता : ग्राम [illegible] पोस्ट/थाना [illegible]
जिला-वैशाली, पिन-[illegible]

मो. 9470638493

साहित्य संसद
नई दिल्ली-110045

बहुजन राजनीति यथार्थ और भविष्य

बहुजन राजनीति
यथार्थ और भविष्य

डॉ. दिलीप कुमार
डॉ. पंकज कुमार

यह पुस्तक हमारे दौर की बहुजन राजनीति की पड़ताल करते हुए इसके भविष्य का भी एक आकलन पेश करती है। इसके सात अध्यायों में विषय से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं की गंभीर विवेचना है। अपने स्वरूप और अन्तर्वस्तु में यह पुस्तक इतिहास, राजनीति-विज्ञान और समाजशास्त्र - तीनों विषय-क्षेत्रों को 'कवर' करती है। पहले अध्याय में बहुजन राजनीति और उसकी पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया है और दूसरे में बहुजन राजनीति की समस्याओं को सामने रखा गया है। इसमें कुछ बहुत जरूरी सवाल और मुद्दे उठाये गये हैं। आगे के तीन अध्यायों में आधुनिक भारत की तीन बड़ी शख्सियतों-प्रेमचंद, डॉ. अम्बेडकर और कांशीराम के जरिये बहुजन समाज और उसकी राजनीति को समझने और समझाने की कोशिश की गई है। पुस्तक के एक अन्य अध्याय-'बहुजन राजनीति और बहुजन समाज पार्टी' में बसपा के माध्यम से हिन्दी भाषी क्षेत्र में किये बहुजन राजनीति की सफलता-विफलता के प्रयोग की गंभीर पड़ताल है। सातवां अध्याय 'बहुजन राजनीति की चुनौतियां और समाधान' विचार और विश्लेषण के स्तर पर पुस्तक का बेहद विचारोत्तेजक अध्याय है।

किताब की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है, इसका बहु-आयामी होना है। यह जितनी सूचनात्मक है, उतनी ही शोधपरक और विश्लेषणात्मक भी। अपने विषय पर यह गंभीर किताब पेश

शेष अगले फ्लैप पर...

Reflections on Gender Issues : Forging Sustainable Future Tomorrow

Editor

Dr. Avinash Kumar Jha

Associate Professor

University Department of History

Patliputra University, Patna

Co-Editor

Anup Kumar Jha

Assistant Professor & Head

Department of Economics, J.N.L. College, Khagaul

Patliputra University, Patna

Laxmi Publication

D/5, Near Durga Mandir, Indrapuri

Loni, Ghaziabad (U.P.)

ISSN No. 0975-3672

ITIHAS KI KHOJ MEIN

(इतिहास की खोज में)

A Research Journal of History

Vol.-XIII | July-December, 2018 | No.-1

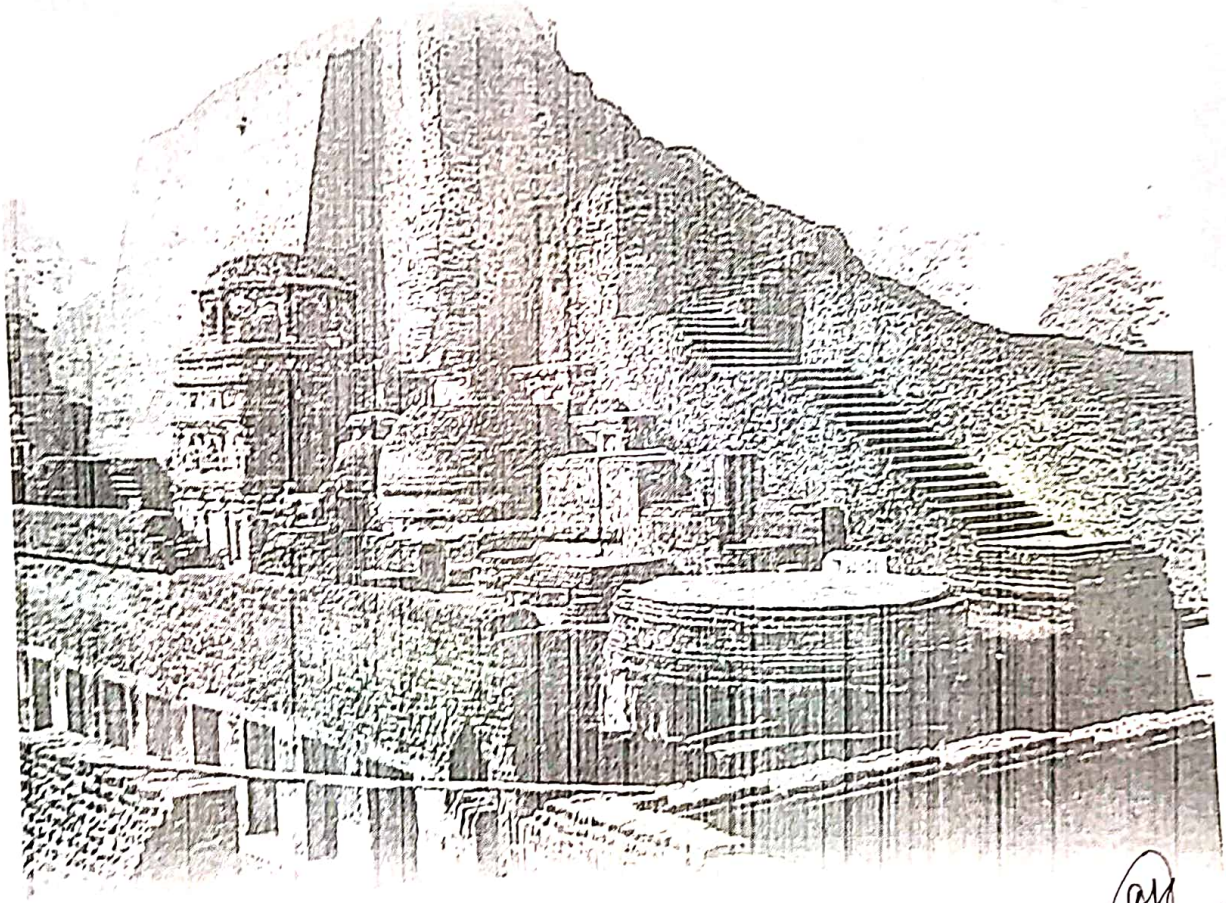

Edited by : Dr. Avinash Kr. Jha

CENTRE FOR GENDER STUDIES, PATNA

Estd. 2008-2009

OPEN ACCESS PEER-REVIEWED CHAPTER

Visceral Leishmaniasis: Asymptomatic Facts

WRITTEN BY

Medhavi Sudarshan and Sumit Sharan

Submitted: 17 September 2021 , Reviewed: 07 October 2021 , Published: 03 November 2021

DOI: 10.5772/intechopen.101109

FROM THE EDITED VOLUME

Leishmaniasis - General Aspects of a Stigmatized Disease

Edited by Leonardo de Azevedo Calderonon

Book Details | Order Print

CHAPTER METRICS OVERVIEW

285 Chapter Downloads

View Full Metrics

DOWNLOAD FOR FREE

Share Cite